वीरांगना रानी दुर्गावती की शासन-व्यवस्था
(अष्ट आभूषण के विशेष संदर्भ में)

विपिन बिहारी ब्यौहार

प्राचीन काल में विश्व में जितने भी बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं उनमे स्त्रियों की ही प्रमुख भूमिका रही है–

- महाभारत युद्ध में गांधारी, कुंती, द्रौपदी आदि महादेवियाँ थीं, परंतु किसी ने भी अन्याय, अत्याचार के विरोध में शस्त्र नहीं उठाए।
- राम-रावण युद्ध में माता सीता को घोर यातना के दौर से गुजरना पड़ा, अपार कष्ट सहे पर शस्त्र का उपयोग नहीं किया।
- राजपूताने की हजारों महिलाओं ने स्वत्व की रक्षा के लिए सामूहिक ज़ौहर किया पर किसी ने शस्त्र नहीं उठाया।
- महाराणा प्रताप व उनकी पत्नी, बच्चे वन-वन भटके पर किसी महिला ने शस्त्र नहीं उठाया।
- हाँ, मुग़लों के खिलाफ आत्मोत्सर्ग करने वाली कुछ वीरांगनाओं के नाम सामने आते हैं जिन्होंने मुस्लिम आक्रांताओं से लोहा लिया अतः उनका नाम उल्लेखित करना ज़रूरी प्रतीत होता है।

सिंध के राजा दाहिर की पत्नियों और पुत्रियों का बलिदान, मीर कासिम की दासिता स्वीकार नहीं की और अपना सर कलम कर लिया।

महारानी पद्मावती ने अलाउद्दीन के खिलाफ राजपुर वीरांगनाओं के साथ जौहर किया।

राणा उदय सिंह की धाय पन्ना माँ का बलिदान कौन भूल सकता है।

रानी कर्णावती ने भी हुमायूँ के सामने पराधीनता स्वीकार नहीं की।

रानी सारंधा (ओरछा) रानी ओरछा के राजा चंपक राय की पत्नी थी। उन्होंने भी औरगंजेब की सेना के सामने उसकी ही उपस्थिति में अपनी गर्दन तलवार से काटकर आत्मोत्सर्ग किया था।

राजकुमारी रत्नावती (जैसलमेर) ने भी बादशाह अलाउद्दीन खिलज़ी के सामने अपना बलिदान दिया।

वीर बाला चम्पा (महाराणा प्रताप की पुत्री) ने भी विपरीत परिस्थितियों के चलते जंगल में भूख-प्यास से लड़ते अपनी जीवन-लीला समाप्त की थी। मृत्यु पूर्व पिता की गोद में सिर रखकर उसने कहा था कि पिताजी कितनी भी विषम परिस्थितियाँ हों, मेरी शपथ है आपको अकबर की अधीनता कभी स्वीकार न करें।

रानी दुर्गावती का इतिहास उस समय का है जब पूरे देश में अकबर का शासन था। रानी दुर्गावती का नाम भारत की उन महानतम वीरांगनाओं की सबसे अग्रिम पंक्ति में आता है जिन्होंने मात्र भूमि और अपने आत्मसम्मान के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। रानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीरत सिंह चंदेल (कीरत राय) की पुत्री व गोंड राजा दलपतशाह की पत्नी थी। रानी दुर्गावती का दुर्भाग्य था कि वे विवाह के महज़ कुछ साल बाद ही विधवा हो गई थीं। 5 वर्ष के पुत्र (वीरनारायण) को राज्य पद में विभूषित कर गोंडवाना राज्य की सुरक्षा व विस्तार में पूरा समय देने लगीं। विश्व इतिहास में रानी दुर्गावती का नाम उज्ज्वल कीर्ति के साथ अंकित है जिसने न केवल अपने ऊपर हो रहे अत्याचार और अन्याय के विरोध में तत्कालीन विश्व के सबसे ताकतवर व समर्थशाली मुगल साम्राज्य के विरोध में मोर्चा खोला व शस्त्र उठाए वरन् स्वयं गजारूढ़ हो शत्रु का विनाश करती हुई युद्ध-क्षेत्र में ही आत्मबलिदान कर दिया। अकबर ने संभवतः विधवा रानी की परिस्थिति व छोटे से पुत्र को कमज़ोरी मानकर

गोंडवाना में हमला करने की योजना बनाई थी। उसे मालूम था कि गोंडवाना राज्य बहुत समृद्धिशाली है।

मंडला के कवि प्रहलाद कुमार अग्रवाल (मित्तल) ने रानी के बारे में लिखा है–

रण में लहरों सी लहराती, दुर्गा गज पर रही सवार,
दुश्मन भय खाता था उनसे, जब चलती उनकी तलवार ।
समरभूमि में लड़ती रानी, लगती थी मानो हो ज्वाला,
मथती अरि सेना को ऐसे, ज्यो कलि हो कंकाला।
युवराज़ी चंदेल वंश की, सौम्य रूप अवतारी थी,
अपनों पर वात्सल्य बिखेरे दुश्मन पर अति भारी थी।
झुकी नहीं अन्याय के आगे, गौरव से मरना जाना,
अपनी आन, बान के आगे, मुग़लों से लड़ना ठाना।

रानी दुर्गावती क्षत्रिय कुल में उत्पन्न, ससुर संग्राम साही (पहले साहि ही प्रचलित था बाद में साह हुआ) से प्राप्त उस विशाल गोंड साम्राज्य (जो यादव राय से लेकर, सुमेद साहि) को धरोहर से बढ़कर प्यार किया एवं उसकी चिंता जी-जान से की। इतिहासकारों ने गोंड साम्राज्य के अंतिम शासक (सुमेद साहि) को माना है। मैथिल श्री रूपनाथ के अनुसार गोंड साम्राज्य सन् 456, स्लीमन के अनुसार 45 और पंडित गणेश दत्त पाठक के अनुसार सन् 514 तक था। रानी दुर्गावती ने महाराजा संग्राम सिंह (50), दलपति सिंह (5) व वीरनारायण (15) का शासन देखा। कुल गोंडवाना शासनकाल लगभग 1200 वर्ष तक माना जाता है। तीन राजाओं के शासनकाल का अनुभव रानी के समय काम में आया। उत्तर में ओरछा, टीकमगढ़ भोपाल से लेकर रतनपुर (छत्तीसगढ़) तक फैला था। सभी वर्ग, धर्म, पंथ, मतावलंबियों, साधु-संतों, संगीतकारों, साहित्यकारों व कलाकारों का भरपूर सम्मान था। रानी के राज्य में प्रजा सुखी थी। गोंडवाना संस्कृति सबसे समृद्ध मानी जाती थी। शक्तिशाली व धन-धान्य से परिपूर्ण राज्य पर नज़र अकबर की पड़ी। रानी दुर्गावती ने अपनी राज्य व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए अपने कुछ विश्वास पात्रों को अपनी टोली में रखा था। जो सैनिक व्यवस्था,

अर्थव्यवस्था, न्याय व्यवस्था, कल्याणकारी व्यवस्था, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक व्यवस्था व अन्य कार्यों की देखभाल व चिंता करते थे, ये अष्ट आभूषण थे, इनके अपने-अपने दायित्व थे। वे प्रतिभावान, वीर, बहादुर, अच्छे योजनाकार थे व रानी के प्रति पूर्ण समर्पित थे। कुछ लोग उन्हें रानी के दरवारी भी कहते थे। उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. महेश ठाकुर–ये रानी के पुरोहित थे। प्रजा पथ, धर्मकर्म इनके ज़िम्मे था। वे मैथिल ब्राण थे। मैथिली ब्राणों में 'ठाकुर' आस्पद होता है। मैथिल कोकिल विद्यापति तथा प्रसिद्ध कवि रवींद्रनाथ टैगोर ये दोनों सज्जन ठाकुर वंश के थे। बंगाली में वे अपने आपको ठाकुर लिखते थे। उनका कुटुंब मिथिला से बंगाल चला गया था। महेश ठाकुर के छोटे भाई का नाम दामोदर था। महेश ठाकुर के शिष्य रघुनंदन राय नाम के मैथिल ब्राण थे। एक समय अस्वस्थ होने के कारण महेश ठाकुर पुराण बाँचने नहीं जा सके और उन्होंने रघुनंदन राय को भेज दिया। रघुनंदन राय ने बहुत विद्वतापूर्वक पुराण बाँचा पर रानी की समझ में कुछ नहीं आया। रानी ने कुछ नहीं कहा। रघुनंदन राय को बहुत बुरा लगा। आगे चलकर मिथिला का राज्य महेश ठाकुर को मिला और वे प्रथम दरभंगा नरेश हुए। गढ़ा की पुरोहिती उनके छोटे भाई दामोदर ठाकुर करते रहे। गढ़ा में महेश ठाकुर की याद में तिरहुतिया ताल आज भी है। गढ़ा के पास महेशपुर गाँव है जहाँ ठाकुर ताल भी है, जहाँ देवी की मूर्ति आज भी औंधी पड़ी हुई है।

2. रघुनंदन राय–जैसा कि वर्णित है रघुनंदन राय गुस्से में गोंडवाना राज्य की सीमा से बाहर चले गए और बस्तर (छत्तीसगढ़) पहुँचे। विद्वान तो थे ही, वहाँ उनका शास्त्रार्थ हुआ। बस्तर के राजा प्रसन्न हुए, पचास हाथी इनाम में मिले। रघुनंदन राय वापस रानी के पास लौटे और उन्हें सफेद हाथी भेंट किया जो 'सरमन' नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर अकबर के दरबार में गए। अकबर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें मिथिला का राज्य दिया। चूँकि उन्हें ये सारा ज्ञान अपने गुरु से प्राप्त हुआ था अतः गुरु को मिथिला का राज्य उनके चरणों में अर्पित कर दिया, जब सफेद हाथी की जानकारी अकबर को लगी तो रानी के पास अकबर का संदेश इन शब्दों में आया जो बुंदेलखंड में प्रसिद्ध है–"अपनी

सीमा राज की अमल घरो परमान भेजो नाग सुवेत सुहेत सोई, अरु आधार दीवान" सफेद हाथियों का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। इंद्र का ऐरावत हाथी भी सफेद था। संभव है कि ब्र देश में इरावती नदी के किनारे कभी सफेद हाथी मिलते रहे हों। रानी दुर्गावती के 20 वर्ष पहले भी एक जगह सफेद हाथी का वर्णन मिलता है। मोहम्मद गौरी उर्फ शहाबुद्दीन ने सन् 1060 में पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया था और सन् 1061 में कन्नौज में जयचंद को। उस समय गौरी ने बहुत लूटपाट की थी। उस लूटपाट में गौरी को एक सफेद हाथी भी मिला था। इतिहास लेखक इन अल आमिर ने लिखा है कि पकड़े गए हाथी जब शहाबुद्दीन के सामने लाए गए और उसे सलाम करने का आदेश दिया तो सबने सलाम किया, पर उस सफेद हाथी ने सलाम नहीं किया, इस तरह रघुनंदन राय अंतिम समय तक रानी के सलाहकार के रूप में रहे।

3. स्वामी विट्ठलनाथ–रानी दुर्गावती ने भैरव के उपासक महाराज संग्रामसाही की पुत्रवधू होते हुए, वैष्णव मत की दीक्षा ली थी। कहा जाता है, ये उस समय की बात है जब महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी के पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी कुछ अनुयायियों के साथ गढ़ा मंडला की ओर भ्रमण कर रहे थे। उन्हें आशा नाम के गाँव के पास ठाकुर सेवा करनी पड़ी थी। उन्होंने आग लेने के लिए (रसोई बनाने को) आदमी को उस गाँव में भेजा। उनके आदमी ने घर-घर अग्नि के लिए याचना की पर किसी गृहस्थ ने अग्नि नहीं दी। बेचारा निराश होकर विट्ठलनाथ जी के पास आया और गाँव वालों की प्रतिकूलता की बात बताई। विट्ठल जी बहुत दुखी हुए, क्योंकि ठाकुर जी का भोग समय पर नहीं लग सका। वे अन्यत्र चले गए। उनके जाने का प्रभाव ये पड़ा कि आशा गाँव में किसी के यहाँ अग्नि ही नहीं जलती थी। शायद ये संत महात्मा का श्राप लग गया था। रानी को जब इसकी खबर मिली और इसका कारण जाना तो रानी विट्ठलनाथ के पास स्वयं घोड़े से पहुँची और उनके चरणों में गिर पड़ी और क्षमा माँगी। उन्होंने प्रजा के अपराध को अपना अपराध माना। रानी ने अपना अपराध स्वीकार किया तब स्वामी जी प्रसन्न हुए। आशा गाँव की अग्नि जलने लगी। इस क्षमादान के लिए रानी ने विट्ठलनाथ जी को 20 गाँव का प्रस्ताव दिया। स्वामी जी ने कहा कि मैं तो संत हूँ,

मुझे इनकी क्या जरूरत। रानी जिद पर अड़ गई तो स्वामी जी ने कहा कि मेरे सामने इन 20 गाँवों को 20 ब्राणों को बाँट दो। रानी जी ने वैसा ही किया। एक तो अग्नि का चमत्कार, दूजे 20 गाँव की निर्लोभिता ने रानी को विट्ठलनाथ जी की शिष्यता ग्रहण करने के लिए विवश कर दिया। विट्ठलनाथ जी ने धर्म के प्रचार-प्रसार में हमेशा रानी को आशीर्वाद दिया।

4. मधुकर भट्ट–तेलंग ब्राण मधुकर भट्ट अपने साथ में साढ़े सात सौ ब्राणों को लेकर, मूंगिपत्तन, मधुपुरी, रंगपत्तन, कोलेश्वर आदि स्थानों से सन् 225 में नर्मदा तट के गढ़ा क्षेत्र में आए। कालान्तर में इन पंडितों ने राजस्थान, अंतर्वेद, भदावर, बुंदेलखंड आदि स्थानों में निवास-करना प्रारंभ किया। हिंदी के प्रसिद्ध कवि पद्माकर इसी वंश के थे। पद्माकर के पिता मोहनलाल, सागर नरेश रघुनाथ राव (अप्पा साहिब) के मुसाहिब थे। मधुकर भट्ट ने गोंडवाना राज्य में साहित्यकारों और कवियों को उचित स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

5. ब्यौहार आधार सिंह कायस्थ–दुर्गावती के समय उनके दीवान आधार सिंह कायस्थ थे। आधार सिंह अपनी वीरता, बुद्धिमानी कार्यक्षमता और स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध थे। महारानी सबसे ज़्यादा उन्हीं पर विश्वास करती थीं। आधार सिंह का खुदवाया आधारताल आज भी प्रसिद्ध है। उनके नाम का रेलवे स्टेशन भी है। सागर जिले के गोंडी क्षेत्र में केसली विकासखंड में आधारपुर नाम का एक गाँव भी है। आधार सिंह की मृत्यु के बारे में मतभेद है। कुछ लोग रानी दुर्गावती के साथ तो कुछ वीरनारायण के साथ चौरागढ़ में शहीद होना बताते हैं। इतिहास में लिखा है कि युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व आधार सिंह कायस्थ, अकबर के दरबार में गए थे। चाहे अकबर के बुलाने पर गए हों या रानी द्वारा युद्ध को टालने के लिए। वहाँ पर अकबर ने इनकी बुद्धिमानी की परीक्षा ली और उनको बहुत बुद्धिमान पाया। प्रसिद्ध है कि इनसे अकबर ने पूछा, तुम्हारा देश कैसा है। जिसके उत्तर में उन्होंने सोने का बना हुआ करेला अकबर के सामने पेश किया। करेला पेश करने का आशय यह था कि हमारा देश सोने की तरह संपन्न और करेले की तरह ऊबड़-खाबड़ है।

अकबर, आधार सिंह की परीक्षा लेने के लिए अपना सिंहासन खाली करके स्वयं सादे कपड़ों में अन्य मुसाहिबों के बीच बैठ गए। बाद में आधार सिंह को बुलवाया गया। आधार सिंह आए तो बादशाह का सिंहासन खाली दिखा। वे सोच में पड़ गए कि अकबर कौन है और किसको मुजरा (अभिवादन) किया जाए। आधार सिंह को अकबर को पहचानने में देर न लगी। उन्होंने अकबर को मुजरा किया तब अकबर प्रसन्न हो गया और पूछा कि तुमने कैसे जाना कि मैं ही अकबर हूँ। आधार सिंह ने जवाब दिया, हुजूर सारे मुसाहिब आपकी ओर ही देख रहे थे। अकबर ने आधार सिंह को खिल-अत देकर विदा किया। इस प्रकार के बहुत-से उदाहरण आधार सिंह की विद्वता के इतिहास में हैं। कहा जाता है कि रानी की गर्दन और आँख में तीर घुसा तो रानी ने आधार सिंह से कहा कि मेरी हत्या कर दो पर सेवा-भक्त आधार सिंह ने ऐसा करने से मना कर दिया। महारानी ने आधार सिंह से कहा कि तुम वीरनारायण को लेकर चौरागढ़ की ओर जाओ पर घायल आधार सिंह ने अन्य साथियों के साथ वीरनारायण को चौरागढ़ कूच करने का आदेश दिया और स्वयं रानी के पास रहे। रानी ने अपनी कटार से स्वयं का बलिदान कर दिया और आधार सिंह भी लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए।

6. भोज सिंह कायस्थ–महाराज संग्राम सिंह शाह के समय सेना के ऊँचे पद पर थे। इन्होंने राज्य विस्तार देखा। दलपतशाह के समय की सुव्यवस्था देखी। रानी दुर्गावती के समय की संपन्नता देखी। आपके अनुभव का लाभ रानी ने सैन्य व्यवस्था को मजबूत करने में किया। नरई नाला में रानी की घायल अवस्था के समय में भी आप मुग़लों से लड़ते रहे। बूढ़े थे पर वीरनारायण के साथ चौरागढ़ के खजाने की रक्षा करने के लिए, आसफ़ खाँ के हमला करने के पहले पहुँच गए थे। जब आसफ़ खाँ का हमला हुआ तो तलवार लेकर निकल पड़े थे। वीरनारायण ने इनको आदेश दिया कि महिलाओं का अपमान न होने पाए। चौरागढ़ की लड़ाई में इन्होंने महिलाओं के जौहर को सफल बनाया और फिर स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए।

7. मान ब्राण–मान ब्राण भी रानी दुर्गावती के दरबारियों में गिने जाते है। अबुल फज़ल ने इनकी सराहना की है।

8. मियाँ भिकारी रूमी–अफगान, रानी दुर्गावती की सेना में ऊँचे पद पर थे। चौरागढ़ के खजाने की रक्षा के लिए इनको रखा गया था। इन्होंने जौहर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

ये वो अष्ट आभूषण थे जिन पर रानी हमेशा विश्वास करती थीं जो उनके सुख-दुःख के साथी भी थे। रानी दुर्गावती की पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि श्री प्रहलाद कुमार अग्रवाल मंडला की कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

वीरों की भी बहुत कदर थी, कायस्थ, ब्राण और अफगान,
वीर बुंदेला और बघेला, पाते थे वो सब सम्मान।
वह चंडी सी काल निशा बन, रण प्रांगण में घूमी थी,
थी शत्रु संहार की प्रबल कामना, रण के मद में झूमी थी।
रानी ने की सिंग गर्जना, और लपकी लेकर अपनी तलवार,
वहाँ वीरनारायण पर भी, होने लगे वार पर वार।
घायल हुआ वीरनारायण, किंतु न वह हिम्मत हारा,
लड़ता रहा युद्ध भूमि में, बहा रहा लहू की धारा।
छूट गए छक्के दुश्मन के, लगे ढेर थे लाशों के,
विचलित होकर मुग़ल भागते, पड़ते थे लाले प्राणों के
अरि सेना में घूम रही थी चंडी बन कर रानी
उसकी भीषण मार-काट से दुश्मन में थी हैरानी।
एक तीर गर्दन में लागा, आँख में एक समाया था।
अभिमन्यु-सी घिरी शत्रु से, संकट तब गहराया था।
आत्मघात किया रानी ने, अंतकाल तब आया था।
थी गरिमा नारी की भारी, मृत्यु को कंठ लगाया था।
चेतना और सत्मार्ग जगाने, इस जग में वह आई थी,
मातृभूमि की रक्षा खातिर, वह संघर्ष सिखाने आई थी।
माताओं के जीवन में नव ज्योति जगाने आई थी,

साहस और सुराज्य प्रेम का पाठ पढ़ाने आयी थी।

जलती ज्योति समाधी में, नित दुर्गा का श्रृंगार करे,

गढ़ मंडला की अमर वीरांगना, जन-जन तुमको याद करे।

जन-जन तुमको याद करे, जन जन तुमको याद करे।।

संदर्भ ग्रंथ

- गढ़ा के गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- मध्य प्रदेश के रणबाँकुरे, डॉ. सुरेश मिश्र व भगवानदास श्रीवास्तव, स्वराज संस्थान सचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश, 2007
- The Gond kingdom of Garha, Dr. Suresh Mishra, Manak Publications, Pvt., Ltd., New Delhi.

विपिन बिहारी ब्यौहार

पूर्व अध्यक्ष म.प्र. लोक सेवा आयोग, पूर्व प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्री,

कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर